13

घर जहां आत्मा वास करता है ...

शरीर और आत्मा-जीवनशैलियां, जो वैवाहिक जीवन को बनाती या तोड़ती हैं

(गलातियों 5:16-26)

हम तूफ़ानों, भूकम्पों और अन्य प्राकृतिक आपदाओं से होने वाली भयंकर तबाही की बात से भयभीत हो उठते हैं। पर एक तबाही, जो शायद उतनी ही खतरनाक है, जो दशकों से घरों का विनाश कर रही है: घर का टूटना है।

अमेरिका में शायद 40 प्रतिशत विवाह विनाशकारी परिणामों के साथ तलाक में खत्म हो जाते हैं। कई दम्पत्ति एक छत के नीचे रहते तो हैं पर वे खुश नहीं हैं। कई तो शायद बच्चों के कारण पारिवारिक ज़िम्मेदारी को निभा रहे हैं। विवाह में अपने सम्बन्ध का दोनों में से किसी भी साथी को आनन्द नहीं मिलता।

क्या इस समस्या का कोई तोड़ है? लगता नहीं कि इसका तोड़ मनुष्य के पास हो। आवश्यकता ईश्वरीय हस्तक्षेप की ही है। घर पर इस अध्ययन का थीसिस वास्तव में वही है। यदि हम खुशहाल अर्थात सफल घर चाहते हैं तो हमें ऊपर से सहायता, विशेषकर बल की आवश्यकता है। हमारा अध्याय गलातियों 5:16-26 के अध्याय पर है:

> पर मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे। क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में, और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक-दूसरे के विरोधी हैं; इसलिए कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ। और यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो, तो व्यवस्था के अधीन रहो। शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन। मूर्ति पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म। डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, और इनके ऐसे और और काम हैं, इन के विषय में मैं तुम को पहिले से कह देता हूं जैसा पहिले कह भी चुका हूं कि ऐसे-ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं। और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उस की लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।
>
> यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी। हम घमण्डी

होकर न एक-दूसरे को छेड़ें, और न एक-दूसरे से डाह करें।

हमारी मुख्य बात को इस प्रकार से कहा जा सकता है कि घर के लोग जैसे पिता, माता और बच्चों को पवित्र आत्मा द्वारा चलाया जाए, जिससे वे आत्मा का फल दें, तो घर न केवल परिवार को बल्कि परमेश्वर को भी भाने वाला होगा।

''सफ़ल'' घर से हमारा क्या अभिप्राय है? अपने उद्देश्यों के लिए घर की परिभाषा हम चार मानदण्डों को पूरा करने के रूप में करेंगे। (1) यह घर परमेश्वर को भाता है। (2) पति-पत्नी जब तक दोनों जीवित हैं, एक-दूसरे से विवाहित रहते हैं, और कोई तलाक नहीं होता। (3) यह एक धन्य घर है, जिसमें परिवार के हर सदस्य को प्रसन्नता, सन्तुष्टि और आत्म-सन्तुष्टि मिलती है। (कई दम्पत्ति तलाक से बचते हैं पर उनके विवाह तनाव से कटे हैं। हमारी परिभाषा के अनुसार उनके घर वास्तव में सफल नहीं हैं।) (4) मसीहियत घर से ही रोशन होती है।

यह चौहरी परिभाषा है। जो इस शृंखला के पाठकों को हर किसी के घर के लिए प्रासंगिकता बना देती है। कुछ घर तलाक से हो या मृत्यु से, पहले ही टूटे हुए हैं। अन्य घरों में केवल एक व्यक्ति जीवित है। ऐसे मामलों में तलाक से बचने के ढंग और विवाह के साथी के साथ कम से कम थोड़ी देर के लिए प्रसन्न रहने के सुझाव अप्रासंगिक हैं, परन्तु घर परमेश्वर को कैसे भा सकता है और मसीहियत को फैलाने का केन्द्र कैसे बन सकता है पर सुझाव कभी भी प्रासंगिक नहीं है। कोई चाहे अकेला हो, नवविवाहित, तलाकशुदा, बड़े हो चुके बच्चों के साथ जो घर से दूर रह रहे हैं, विवाहित या अपने पति या अपनी पत्नी की मृत्यु के कारण अकेला हो, उसका घर वह माध्यम होना चाहिए जिसके द्वारा मसीह संसार को आशीष देता है।

ये अध्ययन इस बात पर ज़ोर देंगे कि बहुत दिए गए चार मापदण्डों को हमारे घर कैसे पूरा कर सकते हैं। सफ़लता मिल सकती है यदि घर के लोग 5:22, 23 में बताए आत्मा के फल देने लगें।

आत्मा के विभिन्न फलों की चर्चा और उन्हें घर पर लागू करने से पहले हमें वचन को फिर से पढ़ने पर पूछना चाहिए कि यह हम में से हर किसी के व्यक्तिगत स्वरूप पर कैसे प्रासंगिक है। इस वचन में दो जीवनशैलियां पता चलती हैं, जिनमें एक तो शरीर के अनुसार जीना है और दूसरी आत्मा के साथ जीना है। दोनों जीवनशैलियों में किया गया चयन विवाह को बना या बिगाड़ सकता है।

इस वचन का क्या अर्थ है?

संदर्भ

गलातियों की पुस्तक में पौलुस ने शायद उन झूठे शिक्षकों को डांट लगाई, जो गलातिया की कलीसिया में यह शिक्षा ले आए थे कि अन्यजातियों से मसीही बनने वालों को मसीही बनने के लिए व्यवस्था को, विशेषकर खतने को मानना आवश्यक है।

उस झूठी शिक्षा या गलत डॉक्ट्रिन का जिक्र करते हुए पौलुस ने तर्क दिया कि गलातिया के लोगों को व्यवस्था से स्वतन्त्र किया गया था। अब वे मसीह में स्वतन्त्र हैं (5:1)! पर पौलुस ने कल्पना की कि उसके पाठकों में से कुछ को यह लग सकता है कि वे व्यवस्था से छूट गए

हैं। इस कारण वे जैसे चाहें जी सकते हैं और अब किसी पाबन्दी के अधीन नहीं हैं। पौलुस उन्हें बताना चाहता था कि उनकी स्वतन्त्रता का अर्थ बिना रुकावट के नहीं है। वे अपनी स्वतन्त्रता को पाप करने का लाइसेंस न मानें (5:13) बल्कि इसके बजाय अपने आपको प्रेम की व्यवस्था से बांधें (5:14)।

आज्ञा

हम प्रेम की व्यवस्था से कैसे बन्धे हैं? पौलुस की आज्ञाओं से गलातिया के मसीही लोगों को ''आत्मा के अनुसार चलना [या जीना]'' न कि ''शरीर की लालसा पूरी करना'' आवश्यक है (5:16)।

झगड़ा

''आत्मा'' और ''शरीर'' दोनों अभिव्यक्तियां विरोधाभासी नियमों को दर्शाती हैं। उनमें हमेशा एक-दूसरे के नियमों को लेकर सदा लड़ाई होती रहती है। रोमियों 7:23 में पौलुस ने इसे ''अंगों में लड़ाई'' कहा: ''परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है, और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है, जो मेरे अंगों में है।''

हमें इस गृह युद्ध की दो बातों को समझना आवश्यक है: (1) यह मसीही लोगों के लिए चुनौती बनी हुई है। हमें परीक्षा से छूट की उम्मीद केवल इसलिए नहीं करनी चाहिए कि हम मसीही बन गए हैं। फिर भी मसीही होने के नाते हम गैर मसीही लोगों से कहीं बेहतर हैं क्योंकि हमें मसीही जीवन जीने में सहायता मिलती है। यह सहायता पवित्र आत्मा की ओर से मिलती है। (2) नियम अर्थात शरीर बनाम आत्मा तो दोनों के पास होते हैं पर व्यक्ति के जीवन में दोनों में से एक की ओर झुकाव रहता है। प्रभाव के दर्जे हो सकते हैं पर यकीनन एक अधिक प्रमुख होगा। इसलिए यह जाना जा सकता है कि हम शरीर के अनुसार चल रहे हैं या आत्मा के अनुसार।

अन्तर

कौन से चिह्न हैं जिन से यह होता है? पौलुस ने शरीर की जीवनशैली और आत्मा की जीवनशैली में अन्तर किया।

संख्या में अन्तर है। यह महत्वपूर्ण हो सकता है कि शरीर की जीवनशैली की पहचान शरीर के (गलातियों 5:19) ''कामों'' (बहुवचन) से होती है जबकि आत्मा की जीवनशैली की पहचान आत्मा का ''फल'' (एकवचन) होती है। पौलुस द्वारा दी गई नौ आत्मिक विशेषताएं आत्मा के ''फल'' नहीं, बल्कि आत्मा के ''फल'' के विभिन्न पहलू हैं। शायद पौलुस इसकी पूर्णता पर ज़ोर देना चाहता है। वह कहता रहा हो सकता है कि हर मसीही को अपने जीवन में इन सभी गुणों को रखना आवश्यक है, और जिसमें इन गुणों की कमी है, बल्कि आत्मा के फल देने से रह गया है।

दोनों जीवनशैलियों के प्रारम्भ में अन्तर है। शरीर की जीवनशैली का आरम्भ कहां हुआ? शरीर के साथ! अन्य शब्दों में इस जीवनशैली का आरम्भ हमारे साथ होता है! हमें शरीर की पूरी ज़िम्मेदारी को मान लेना आवश्यक है।

आत्मा की जीवनशैली कहां से आई? पवित्र आत्मा से! यह जीवनशैली स्वर्गीय है।

पवित्र आत्मा यह फल कैसे देता है? वह हमारे जीवनों में आश्चर्यकर्म के द्वारा फल नहीं देता। आश्चर्यकर्मों का यह दौर (जिस प्रकार नये नियम के समय में होते थे) बीत चुका है। इसके बजाय पवित्र आत्मा आज हमारे जीवनों में दो प्रकार से फल देता है। पहला, वह हम में वास करता है और परमेश्वर की इच्छा के आगे समर्पण करते हुए हमें आत्मिक रूप में बढ़ने में सहायता करता है। वह परमेश्वर के वचन के द्वारा जिसकी उसने प्रेरणा दी, हमें प्रभावित करते हैं हमारे जीवनों में फल लाता है। इन दोनों विचारों में कोई झगड़ा नहीं है। परमेश्वर के विचारों को पढ़ने और उसकी बात मानने की खोज करने पर हम पवित्र आत्मा से और प्रभावित होते हैं, और आत्मिक रूप में बढ़ते हैं। इसके साथ पवित्र आत्मा हमें मज़बूत बनाता और प्रोत्साहित करता और उपाय करके हमें और भी बढ़ने के योग्य बनाता है। आत्मिक रूप में बढ़ने पर बढ़ना जारी रखते हुए हम परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से दिए गए वचन की ओर, बढ़ते हैं और, इसकी आज्ञा मानकर आत्मिक रूप में बढ़ते रहते हैं। फिर हम देखते हैं कि वचन का प्रभाव हमें मज़बूत करने और हमारे अन्दर आत्मा को हमें मज़बूत करने के योग्य बनाता है और हमारे अन्दर वास करने वाला आत्मा परमेश्वर के वचन की ओर निरन्तर मुड़ने की ओर प्रोत्साहित करता है।

ध्यान देने वाली शायद सबसे महत्वपूर्ण सच्चाई यह है कि पवित्र आत्मा बिना हमारे सहयोग के यह फल नहीं देता। हम फल देने में निष्क्रिय नहीं हैं। पौलुस ने हमें ''आत्मा के अनुसार चलने'' की आज्ञा दी (5:16, 25)। चलना हमें ही है! आत्मा सचमुच फल देता है, पर हमारे जीवनों में वह तभी देता है जब हम उसे हमें प्राभावित करने देते हैं।

दोनों जीवनशैलियों की विशेषताओं में अन्तर है। पौलुस ने पहले शारीरिक जीवनशैली का विवरण दिया (5:19-21)। शरीर के कामों को पांच शीर्षकों में सक्षिप्त किया जा सकता है: (1) कामुकता के पाप, (2) बनावटी धर्म के पाप, (3) मिज़ाज के पाप, (4) फूट के पाप, (5) असंयम के पाप।

(1) कामुकता के पाप: NASB-अनैतिकता, अशुद्धता, कामुकता।

(2) बनावटी धर्म के पाप: NASB-मूर्तिपूजा, जादूगरी।

(3) मिज़ाज के पाप: NASB-शत्रुता, बैर, डाह, क्रोध करना।

(4) फूट के पाप: NASB-झगड़े, अनबन, दलबन्दी, ईर्ष्या।

(5) असंयम के पाप: NASB-मतवालापन, मद्यपान और ऐसी-ऐसी अन्य बातें।

पौलुस किसकी बात कर रहा था? सांसारिक व्यक्ति की; यह निष्कर्ष निकालने से पहले कि ऐसी सूची में हमारा या हमारे किसी जानकार का काम हो सकता है, इन विशेषताओं पर विचार करते हैं। तो एक बार इस प्रकार की बात करते हैं:

मतवालेपन पर—''मैं इतनी नहीं पीता। कभी-कभी पी लेता हूं, पर मैं रोज़ का आदी नहीं।''

स्वाद, झगड़े या डाह पर—''मैं हमेशा अपनी बात मनवाने पर ज़ोर नहीं देता, पर मैं किसी को अपना नाजायज फायदा नहीं उठाने दूंगा! मैं अपना हक चाहता हूं!''; ''झगड़ा मैंने नहीं बढ़ाया, शुरुआत उसी ने की थी।''

घृणा, डाह या क्रोध पर—''जब उसने मेरे साथ यह किया तो मैंने उसे वही बताया जो मुझे लगता था! अब वह मेरे साथ दोबारा ऐसा कभी नहीं करेगा!''; ''वे लोग इधर क्यों हैं? मैं उन्हें सहन नहीं कर सकता।''

बनावटी धर्म पर—''मुझे चर्च जाने की आवश्यकता नहीं है; धर्म के बारे में मेरा अपना दृष्टिकोण है। व्यक्ति का अपना जीवन सही होना चाहिए वह स्वर्ग में ही जाएगा।''

व्यभिचार या कुंआरों के शारीरिक सम्बन्ध पर—''असंयमी नहीं होना चाहिए पर विवाह के बाहर किसी के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाने में कोई बुराई नहीं है यदि आप सचमुच उसे प्रेम करते हैं''; ''अश्लील चित्रों में क्या बुराई है? इससे किसी को परेशानी नहीं होती।''

जब हम ऐसी बातें सुनते या ऐसी बातें करते हैं तो यह शारीरिक जीवन का प्रमाण है। ऐसी बातों में दिखाया गया व्यवहार वास्तव में औसत सांसारिक व्यक्ति ''संसार का जन'' की विशेषता है। हम सब को ऐसी विशेषताओं को बढ़ावा देने से रोकने के लिए कोशिश करनी आवश्यक है।

इसके विपरीत आत्मा की जीवनशैली की विशेषताएं, प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम हैं (5:22, 23)। सांसारिक व्यक्ति की शारीरिक पहचान के कामों की तरह ही आत्मा के फल उस व्यक्ति के स्वभाव को दिखाते हैं, जो आत्मा के प्रभाव में है। इस फल को देने वाला मसीही व्यक्ति प्रेमी और आनन्द से भरा, शान्त और धीरज वाला, कृपालु और भला, विश्वासी और नम्र तथा संयमी होता है।

दोनों जीवनशैलियों के परिणामों में भी अन्तर है। शरीर के काम करने वाले लोग ''परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं हैं'' (5:21)। पौलुस राज्य के अनन्त चरण की बात कर रहा था (देखें 2 पतरस 1:11); अन्य शब्दों में बिना मन फिराए इस जीवनशैली को अपनाने वाले स्वर्ग में नहीं जा सकते; इसलिए इसका अर्थ यह है कि आत्मा के अनुसार चलने वाले ही उस अनन्त राज्य का आनन्द लेंगे। पौलुस ने कहा कि ''आत्मा का फल'' के विरोध में कोई व्यवस्था नहीं है। उसके कहने का अर्थ था कि इस फल को देने वालों के लिए कभी कोई दण्ड नहीं ठहराया गया यानी इन कामों को करने वालों के लिए किसी दण्ड की आवश्यकता नहीं। जिस जीवनशैली को हम चुनते हैं उसी से तय होगा कि हम अनन्तकाल का समय कहां बिताएंगे!

यह वचन घर पर कैसे लागू होता है?

इस वचन को घर में लोगों के चरित्र के महत्व पर ज़ोर देने के लिए इस्तेमाल करके घर पर लागू किया जा सकता है। मसीही घर कैसे बनता है? मसीही, यानी वे लोग जो मसीही बन गए हैं, जिनमें सचमुच में पवित्र आत्मा का वास है। सबसे सफल घर उन्हीं लोगों से बनते हैं, जो अपने जीवनों में पवित्र आत्मा को फल देने की अनुमति देकर, वैसे रहते हैं, जैसे मसीही लोगों को रहना चाहिए।

हमें नाम के ही नहीं, बल्कि जीवनशैली में भी मसीही होना चाहिए। पौलुस ने 5:25 में

बात को समझाया: ''यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं तो आत्मा के द्वारा चलें भी?'' क्या हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं? क्योंकि आत्मा ने हमें जीवित किया है! हम पवित्र आत्मा के हमारे लिए किए गए काम के कारण मसीही हैं। तो फिर क्यों न आत्मा के द्वारा चलें। यदि हम मसीही हैं तो हम वैसे ही काम भी करें!

हमारे आत्मा का फल देने या इसे न दे पाने से हमारे घरों पर क्या प्रभाव होगा? अपने अध्ययन के आरम्भ में हम ने कहा था कि शरीर और आत्मा की जीवनशैलियां या तो विवाह को बना सकती हैं या तोड़ सकती हैं। वे पति या पत्नी दोनों में से किसी एक के व्यभिचार करने, डाह रखने वाले होने या शराबी, स्वार्थी या शरीर के अन्य कामों का दोषी होने पर विवाह टूट सकता है। दूसरी ओर आत्मा का फल विवाह को मज़बूत बना सकता है: यदि पति की जीवनशैली शरीर के कामों के बजाय आत्मा के कामों से पहचानी जाती है, तो विवाह टिका रहेगा। यदि पत्नी की जीवनशैली से आत्मा के फल की झलक मिलती है तो विवाह बना रहेगा।

सफल विवाह या प्रसन्न घर की कुंजी *हम* हैं। हम में से हर किसी को पूछना चाहिए, ''मैंने कौन सी जीवनशैली अपनाई है?''

सारांश

मेरी पत्नी शार्लट और मैं पॉल फाकनर और कार्ल ब्रेचीन द्वारा आयोजित एक विवाह पर सेमिनार में गए। मैं इस बात से बड़ा प्रभावित हुआ कि उस सेमिनार के पहले ही पाठ का थीम था कि दम्पत्तियों को विवाहित बने रहने के लिए आत्मिक रूप में बढ़ना आवश्यक है। कई वचनों पर चर्चा हुई, जैसे, 2 पतरस 1:5-7, जिनमें नैतिक श्रेष्ठता, ज्ञान, संयम, धीरज, भक्ति, भाईचारे की करुणा और प्रेम के सात मसीही अनुग्रह बताए गए।

वक्ता ने एक अर्थ में यूं कहा था कि ''यदि हम ऐसे लोग बन जाएं, तो हम अपने विवाहों में साथ लेकर चल पाएंगे।'' मुझे वह विचार पसन्द आया और मैं उससे पूरी तरह से सहमत हूं। सबसे बढ़कर सफल घर पाने का ढंग घर में हर व्यक्ति के मसीही के रूप में यानी पूरी कोशिश के साथ प्रभु की सेवा विश्वासी होकर करना है।

विवाह में समस्याएं आ सकती हैं और उन पर काम किया जाना आवश्यक है, या कोई घर तनाव में हो सकता है, जो उसे कुछ समय के लिए खुशहाल न रहने दे। कुछ अवसरों पर तनाव पर काबू पाने में सहायता के लिए कुशल लोगों की आवश्यकता पड़ सकती है। हमारे जीवन की परिस्थितियां अनिश्चित हैं, पर एक सच तो पक्का है कि हम में से हर किसी के लिए खुशहाल घर के लिए आरम्भिक बात आत्मा को हमारे जीवनों को चलाने देना और अपना फल देने देना है!